❍ 29 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗सदैव कंस्ट्रक्शन का काम किया ?∗

➢➢ ∗शक्तिशाली याद द्वारा परिवर्तन, खुह्सी और हलकेपन की अनुभूति की ?∗

➢➢ ∗दिल मजबूर और बुज़ुर्ग रही ?∗

➢➢ ∗सदा प्यार के सागर में लवलीन रहे ?∗

────────────────────────

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °
☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆
❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂
⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

〰✧ जैसे मोटेपन को मिटाने का साधन है खान-पान की परहेज और एक्सरसाइज। वैसे यहाँ भी ∗बुद्धि द्वारा बार-बार अशरीरीपन की एक्सरसाइज करो और बुद्धि का भोजन संकल्प है उनकी परहेज रखो, तो मन लाइट एकरस और शक्तिशाली बन जायेगा।∗

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बंधनमुक्त सहजयोगी आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा स्वयं को बन्धनमुक्त आत्मा अनुभव करते हो? स्वतन्त्र बन गये या अभी कोई बन्धन रह गया है? *बन्धनमुक्त की निशानी है - 'सदा योगयुक्त'। योगयुक्त नहीं तो जरूर बन्धन है।* जब बाप के बन गये तो बाप के सिवाए और क्या याद आयेगा?

〰✧ सदा प्रिय वस्तु या बढीया वस्तु याद आती है ना। तो बाप से श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति कोई है? *जब बुद्धि में यह स्पष्ट हो जाता है कि बाप के सिवाए और कोई भी श्रेष्ठ नहीं तो 'सहजयोगी' बन जाते हैं।*

〰✧ *बन्धनमुक्त भी सहज बन जाते हैं, मेहनत नहीं करनी पड़ती। सब सम्बन्ध बाप के साथ जुड़ गये। मेरा-मेरा सब समाप्त, इसको कहा जाता है - सर्व सम्बन्ध एक के साथ।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

ஃ°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

ஃ°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

ஃ°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ तो औरों के सेवा की बहुतबहुत-बहुत आवश्यकता है। तो यह तो कुछ भी नहीं है। बहुत नाजुक समय आना ही है। *ऐसे समय पर आप उडती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाते, जिसको शान्ति चाहिए, जिसको खुशी चाहिए, जिसको सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में सकाश देने का चक्कर लगायेंगे और वह अनुभव करेंगे।*

〰✧ जैसे अभी अनुभव करते हैं ना, पानी मिल गया बहुत प्यास मिटी खाना मिल गया, टेन्ट मिल गया, सहारा मिल गया। ऐसे अनुभव करेंगे फरिश्तों द्वारा शान्ति मिल गई, शक्ति मिल गई, खुशी मिल गई। *ऐसे अन्त: वाहक अर्थात अन्तिम स्थिति, पॉवरफुल स्थिति आपका अन्तिम वाहन बनेगा।*

〰✧ और चारों ओर चक्कर लगाते सबको शक्तियाँ देंगे, साधन देंगे। अपना रूप सामने आता है? इमर्ज करो। कितने फरिश्ते चक्कर लगा रहे हैं। सकाश दे रहे हैं, तब कहेंगे जो आप एक गीत बाजते हो ना - शक्तियाँ आ गई... *शक्तियों द्वारा ही सर्वशक्तिवान स्वतः सिद्ध हो जायेगा।* सुना।

ஃ°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

ஃ°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

〰✧ अपने को आत्मा समझ उस स्वरूप में स्थित होना है। *जब स्व-स्थिति में स्थित होंगे, तो भी अपने जो गुण हैं वह तो अनुभव होंगे ही। जिस स्थान पर पहुँचा जाता है उसके गुण न चाहते हुए भी अनुभव होते हैं। आप किसी शीतल स्थान पर जायेंगे, तो न चाहते हुए भी शीतलता का अनुभव होगा।* आत्माभिमानी अर्थात् बाप की याद। *आत्मिक-स्वरूप में बाबा की याद नहीं रहे - यह तो हो नहीं सकता है। जैसे बाप-दादा - दोनों अलग-अलग नहीं है, वैसे आत्मिक निश्चय बुद्धि से बाप की याद भी अलग नहीं हो सकती है।*

✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी हॉस्पिटल खोलना"*

➳ _ ➳ बचपन में आसमानी चाँद देख मचला करते थे...पर पा न सके...क्योंकि तब मेरे पास ब्रह्मा मां जो न थी... *आज भाग्य से मिली प्यारी

ब्रह्मा मां ने... मुझे प्यारा शिव चाँद हाथो में दे दिया है.*..और मन इस चाँद से हर पल खेल रहा है... ऐसा खुबसूरत भाग्य... मुझ आत्मा का होगा.... यह तो कल्पनाओ में भी न था... इन मीठी यादो में खोयी खोयी मै आत्मा... मीठे बाबा के कमरे में... अपनी ब्रह्मा माँ और शिव पिता से मिलने पहुंचती हूँ...

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को रूहानी सर्जन बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... मीठे बाबा से जो प्यार और ज्ञान की दौलत पायी है.. उसको पूरे विश्व पर दिल खोल कर बरसाओ... इस धरा से दुखो का नामोनिशान मिटाने वाले मा सुख दाता बनकर मुस्कराओ... *जिन सच्ची खुशियो की मचान पर खिलखिला रहे हो.. इन खुशियां को हर दिल का अधिकार बनाओ.*..

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से पायी असीम खुशियो को अपनी झोली में भरते हुए कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... *आपने मेरा हाथ थामकर मुझे सुखो का सरताज बना दिया है.*. मेरी रूहानी रंगत पर विश्व फ़िदा हो गया है... मै आत्मा सुखो का पर्याय बनकर, हर दिल को सुख भरा रास्ता दिखाने वाली, रौशनी बन गयी हूँ..."

❊ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को अखूट खजानो के मालिक बनाते हुए कहते है :-* "मीठे लाडले प्यारे बच्चे... *ईश्वरीय खुशियो को जितना बांटोगे, उतना धनवान् बन मुस्कराओगे..*. यह ज्ञान धन अखूट है... इसलिए रूहानी सर्जन और प्रोफेसर बनकर, सबको इस रूहानी पढ़ाई से वाकिफ कराओ... सत्य का परिचय देने वाले सच्चे सत्यवान बन मुस्कराओ...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के ज्ञान रत्नों को पाकर कर खुशियो में झूम कर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... सच्चे ज्ञान से कोसो दूर मै आत्मा... कितनी अनपढ सी थी... *आज आपने तीनो लोको का ज्ञान देकर... मुझे प्रोफेसर और सर्जन बना दिया है..* मुझे कुछ भी नही से उठाकर, सब कुछ बना दिया है...

❊ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को रूहानी ज्ञान का प्रतिनिधि बनाते हुए कहते है :-* "जो कार्य मीठे बाबा ने किया है वही कर्तव्य आप बच्चों का है... *सबको

सत्य का परिचय देकर, सच्चे सुखो की अमीरी से भरपूर करो.*.. मीठे बाबा जैसा हर दिल का कल्याण कर... असीम दुआओ और पुण्यो का खाता बढ़ाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने मीठे मीठे बाबा को बड़े स्नेह से निहारते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... आपने विश्व कल्याणकारी बनाकर, मुझे कितना ऊँचा उठा दिया है... *मै आत्मा खुशियो की सौगात लिए, हर दिल आँगन को भरती जा रही हूँ..*. भगवान धरा पर अखूट खजाने बाँट रहा है..यह खबर पूरे विश्व में फैला रही हूँ..."अपने प्यारे बाबा से रुहरिहानं कर मै आत्मा... सृष्टि जगत में लौट आयी...

———————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- मनुष्यों की जीवन कांटे से फूल बनानी है*"

➳ _ ➳ इस काँटो के जंगल (दुखधाम) को फूलों का बगीचा (सुखधाम) बनाने का जो कर्तव्य करने के लिए परमपिता परमात्मा शिव बाबा इस धरा पर अवतरित हुए है उस कार्य में उनका मददगार बनने के लिए मुझे काँटे से फूल बन सबको फूल बनाने का पुरुषार्थ अवश्य करना है और सबको शान्तिधाम, सुखधाम का रास्ता बताना है। मन ही मन अपने आपसे यह प्रतिज्ञा करते हुए अपने दिलाराम बागवान बाप की मीठी यादों में मैं खो जाती हूँ। *प्रभु यादों की डोली में बैठ अव्यक्त फ़रिशता बन इस साकारी दुनिया और दुनियावी सम्बन्धो से किनारा कर मैं चल पड़ती हूँ उस अव्यक्त वतन में जहां मेरे दिलाराम बाबा मेरे आने की राह में पलके बिछाए बैठे हैं*।

➳ _ ➳ वतन में पहुंच कर अब मैं वतन का खूबसूरत नजारा मन बुद्धि रूपी दिव्य नेत्रों द्वारा स्पष्ट देख रही हूं। पूरा वतन रंग बिरंगे फूलों की खुशबू से महक रहा है। मेरे ऊपर लगातार पुष्पो की वर्षा हो रही हैं। *जहाँ - जहाँ मैं पाव रखती हं मझे ऐसा अनभव होता है जैसे मेरे पैरों के नीचे मखमली फंलो

का गलीचा बिछा हुआ है*। सामने मेरे दिलाराम मेरे बागवान बाबा अपने लाइट माइट स्वरूप में रंग बिरंगे फूलो से सजे एक बहुत सुंदर झूले पर बैठे मेरा इन्जार कर रहें हैं। मुझे देखते ही बाबा मुस्कराते हुए स्वागत की मुद्रा में खड़े हो कर अपनी बाहें फैला लेते हैं और आओ मेरे रूहे गुलाब बच्चे कह कर अपने गले लगा लेते हैं।

➳ _ ➳ बाबा की बाहों के झूले में झूलते, अपनी आंखें बन्द कर मैं असीम सुख की अनुभूति में खो जाती हूँ। *अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति का गहराई तक अनुभव करने के बाद मैं जैसे ही अपनी आंखें खोलती हूं तो देखती हूँ कि बाबा के साथ मैं एक बहुत बड़े फूंलो के बगीचे में खड़ी हूँ*। बाबा बड़े प्यार से एक एक - एक फूल पर दृष्टि डाल कर, हर फूल को बड़े प्यार से सहलाते हुए आगे बढ़ जाते हैं। मैं भी बाबा के पीछे - पीछे चलते हुए हर फूल को बड़े ध्यान से देख रही हूं। *कुछ फूल तो एक दम खिले हुए बड़ी अच्छी खुशबू फैला रहे हैं, कुछ अधखिलें हैं और कुछ थोड़े थोड़े मुरझाए हुए भी दिखाई दे रहें हैं*। लेकिन हर फूल के ऊपर प्यार भरी दृष्टि डाल कर अब बाबा वापिस उस झूले पर आ कर बैठ जाते हैं और मुझे भी अपने पास बैठने का ईशारा करते हैं।

➳ _ ➳ मेरे मन मे चल रही दुविधा को जैसे बाबा मेरे चेहरे से स्पष्ट पढ़ रहे हैं इसलिए मेरे कुछ भी पूछने से पहले बाबा मुझसे कहते हैं, मेरे रूहे गुलाब बच्चे:- *"इस काँटो की दुनिया को फूलो की नगरी बनाने के लिए ही बाबा ये सैपलिंग लगा रहें हैं" और ये सभी फूल मेरे वो मीठे, सिकीलधे बच्चे हैं जो श्रीमत पर चल काँटे से फूल बनने का पुरुषार्थ कर रहें हैं, लेकिन नम्बरवार हैं*। इसलिए कुछ फूल तो पूरी तरह खिले हुए हैं जो अपनी रूहानियत की खुशबू सारे विश्व में फैला रहें हैं। कुछ अधखिले हैं जो अभी खिलने के लिए तैयार हो रहें हैं। और कुछ मुरझाए हुए भी हैं जो बार बार माया से हार खाते रहते हैं। लेकिन बाबा अपने हर बच्चे को नम्बर वन रूहे गुलाब के रूप में देखना चाहते हैं इसलिए हर बच्चे को सूक्ष्म में इमर्ज कर उन्हें बल देते रहते हैं।

➳ _ ➳ अपने मन में चल रहे सभी सवालों के जवाब सुन कर अब मैं मन ही मन दृढ़ संकल्प करती हूं कि अब मुझे नम्बर वन रूहे गुलाब अवश्य बनना है। इसलिए *काँटे से फल बन, सबको फल बनाने का ही अब मझे परुषार्थ

करना है*। बाबा मेरे मन के हर संकल्प को पढ़ कर बड़ी गुह्य मुस्कराहट के साथ मुझे देखते हैं और अपना वरदानीमूर्त हाथ मेरे सिर पर रख देते है। मुझे माया जीत भव और सफलता मूर्त भव का वरदान देते हुए मेरे मस्तक पर विजय का तिलक लगाते हैं।

➳ _ ➳ विजय का स्मृति तिलक लगाकर, काँटे से फूल बनने के पुरुषार्थ में आने वाले माया के हर विघ्न का डटकर सामना करने के लिए अब मैं *स्वयं को बलशाली बनाने के लिए निराकारी ज्योति बिंदु आत्मा बन चल पड़ती हूँ अपने निराकार काँटो को फूल बनाने वाले बबूलनाथ अपने प्यारे परमपिता परमात्मा शिव बाबा के पास परमधाम और जा कर उनके सानिध्य में बैठ स्वयं को उनकी सर्वशक्तियो से भरपूर करने लगती हूँ*। स्वयं में परमात्म बल भर कर अब मैं वापिस लौट रही हूँ।

➳ _ ➳ साकारी दुनिया मे, अपने साकारी ब्राह्मण तन में प्रवेश कर, अब मैं अपने सम्बन्ध संपर्क में आने वाली हर आत्मा को सच्चा - सच्चा परमात्म ज्ञान सुना कर उन्हें शान्तिधाम, सुखधाम जाने का रास्ता बता रही हूँ। *रूहानियत की खुशबू चारों और फैलाते हुए अपनी पवित्रता की शक्ति से मैं विकारों रूपी काँटो की चुभन से पीड़ित आत्माओं को उस चुभन से निकाल उन्हें फूलो की मखमली शैया का सुखद अनुभव करवा कर उन्हें भी काँटे से फूल बनने का सत्य मार्ग दिखा रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं शक्तिशाली याद द्वारा परिवर्तन, खुशी और हल्के पन की अनुभूति करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं स्मृति सो समर्थ स्वरूप आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं अनुभवी स्वरूप आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा दिल को मजबूत और बुजुर्ग बनाती हूँ ।*
✺ *मैं संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *जो ब्रह्मा बाप ने आज के दिन तीन शब्दों में शिक्षा दी, (निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी) इन तीन शब्दों के शिक्षा स्वरूप बनो। मनसा में निराकारी, वाचा में निरअहंकारी, कर्मणा में निर्विकारी। सेकण्ड में साकार स्वरूप में आओ, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार करो।* ऐसे नहीं सिर्फ याद में बैठने के टाइम निराकारी स्टेज में स्थित रहो लेकिन बीच-बीच में समय निकाल इस देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो। *कोई भी कार्य करो, कार्य करते भी यह अभ्यास करो कि मैं निराकार आत्मा इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ। निराकारी स्थिति करावनहार स्थिति है। कर्मेन्द्रियाँ करनहार हैं, आत्मा करावनहार हैं। तो निराकारी आत्म स्थिति से निराकारी बाप स्वतः ही याद आता है।* जैसे बाप करावनहार हैं ऐसे मैं आत्मा भी करावनहार हूँ। इसलिए कर्म के बन्धन में बंधेंगे नहीं. न्यारे रहेंगे क्योंकि

कर्म के बन्धन में फँसने से ही समस्यायें आती हैं। सारे दिन में चेक करो - करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ? अच्छा! अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो।

✺ *ड्रिल :- "निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी बनने का अनुभव"*

➳_➳ *मैं आत्मा भृकुटी सिंहासन में विराजमान मन-बुद्धि द्वारा आत्मा रूपी रंग-बिरंगी मोरनी एक बगीचे में पहुँचती हूँ...* मेरे पँखो पर विकार रूपी मैल चढ़ी हुई हैं... अहंकार रूपी कीचड़ में गलकर टूट चुकें हैं... अहंकार के वश रहकर मैं अपने आप को ही भूल चुकी हूँ कि मैं कौन हूँ... आस-पास का वातावरण भी मेरी मैल से दूषित हो चुका है... मैं खुशी रूपी बारिश में न ही नृत्य कर पाती हूँ, न ही उसका लुफ्त उठा पाती हूँ...

➳ _ ➳ अचानक परमधाम से शिव बाबा आ रहे है... *बाबा मुझ आत्मा रूपी मोरनी पर अपनी सुनहरी किरणें न्यौछावर कर रहे हैं... मेरे पँखो से मैल धीरे-धीरे साफ हो रही हैं... वह सोने के पँख बन चुके हैं... अब मैं मनसा में निराकारी, वाचा में निरअहंकारी, कर्मणा में निर्विकारी स्थिति में स्थित रहती हूँ...* देही-अभिमानी स्थिति में स्थित रहती हूँ... अंश मात्र भी अहंकार नहीं करती हूँ... अब कोई भी विकारों के वश कर्म नहीं करती हूँ...

➳ _ ➳ मैं एक सेकंड में साकार स्वरूप में, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ... यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार करती हूँ... सिर्फ याद पर बैठने के समय ही नहीं बल्कि हर समय देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करती हूँ... *जब कोई भी कार्य करती हूँ तो यह अभ्यास करती हूँ कि मैं निराकार आत्मा इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ...*

➳ _ ➳ *कर्मेन्द्रियाँ करनहार हैं, आत्मा करावनहार हैं... अब मैं आत्मा कर्म के बन्धन में नहीं बंधती हूँ... हमेशा न्यारी रहती हूँ...* सारे दिन में चेक करती हूँ कि मैं करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ या नहीं... मैं आत्मा सभी को दःखों से मक्ति दिला रही हूँ... मैं आत्मा बाबा से मिली हुई शक्तियों

को यूज़ करके मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र कर रही हूँ... मैं आत्मा उमंग-उत्साह में रहकर चढ़ती कला का अनुभव कर रही हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं हर कर्म करते वक्त बाबा को ही याद करती हूँ... *मैं जो भी कर्म करती हूँ उसमें सफलता मिलती जा रही हैं... बाबा ने हर कार्य आसान कर दिया हैं... अब मैं बाप समान होने की अनुभूति कर रही हूँ...* एक बाप की याद में रहकर मैं ऊँच स्थान प्राप्त करने के लिए बाबा की श्रीमत को अच्छे से फॉलो कर रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔